'भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन' (1885-1947)

भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण / भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के लिए उत्तरदायी कारक

M.A. SEM-4- Paper- e.c-11 (guess - 1)

राष्ट्रवाद यह भावना है जो लोगों को एकता के सूत्र में बांधती है और स्वराज के प्रति विश्वास पैदा करके राष्ट्रीय आंदोलन को एक ठोस आधार प्रदान करती है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, राजनैतिक संगठनों, विचारकों, क्रांतिकारियों को मिलाकर किये गये कुछ ऐसे आंदोलन थे जिनका एक ही लक्ष्य था भारत से ईस्ट इंडिया कंपनी को जड़ से उखाड़ फेंकना।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन या राष्ट्रवाद का उदय 19वीं सदी के उत्तरार्ध में प्रारंभ हुआ था। भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का विकास तथा भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के लिए स्वयं ब्रिटिश शासन ने आधार तैयार किया।

राष्ट्रवाद के उदय के कारण

राष्ट्रवाद के विकास एवं उदय के लिए विभिन्न कारण सम्मिलित रूप से उत्तरदायी थे। ब्रिटिश शासन तथा उसके प्रत्यक्ष तथा परोक्ष परिणामों ने भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के विकास के लिए भौतिक, नैतिक तथा बौद्धिक परिस्थितियां तैयार की और धीरे-धीरे भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक समूह ने देखा कि उनके हित कभी भी अंग्रेजी शासन के हाथों में सुरक्षित नहीं रह सकते।

(i) अंग्रेजी सरकार की छत्रछाया में किसानों से मालगुजारी के नाम पर उपज का काफी बड़ा भाग ले लिया जाता था। जमींदारों, व्यापारियों तथा सूदखोरों को किसानों से लगान वसूलने तथा तरह-तरह से उसका शोषण करने के लिए सरकारी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों का पूरा

Scanned with CamScanner

सहयोग प्राप्त था। सरकारी नीति जिसमें विदेशी प्रतियोगिता को पूरा प्रोत्साहन दिया जा रहा था, के कारण कारीगर तथा शिल्पी आदि बेरोजगार होने लगे थे, कारखानों तथा बागानों में मजदूरों का हर प्रकार से शोषण हो रहा था।

(ii) अंग्रेज सरकार की इन पक्षपातपूर्ण नीतियों से भारतीयों में राष्ट्रवाद की प्रवृत्तियों ने जन्म लेना प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार इस शताब्दी साम्राज्यवाद विरोधी राष्ट्रीय आंदोलन का धीरे-धीरे विकास हुआ, जिसने लोगों में एकता स्थापित करने और साम्राज्यवाद का मिलकर विरोध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(iii) पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति ने राष्ट्रवादी भावना को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षित भारतीयों को बर्क, मिल, ग्लैडस्टोन, मैकाले जैसे लोगों के विचार सुनने और पढ़ने का अवसर मिला तथा मिल्टन, शैले आदि महान कवियों तथा रूसो, मैजिनी तथा वाल्टेयर के विचारों को समझने का मौका मिला, जिससे भारतीयों में राष्ट्रवादी भावनाओं को जन्म लेने का अवसर मिला।

इसके फलस्वरूप अनेक धार्मिक तथा समाज सुधारकों जैसे, राजा राममोहन राय, देवेन्द्र नाथ ठाकुर, पो. सी. सरकार, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद आदि ने भारत के अतीत का गौरवपूर्ण चित्र उपस्थित कर भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना को जागृत करने का काम किया। अनेक समाचार-पत्रों तथा साहित्यों ने लोगों में राष्ट्रीय जागरण की भावना को जगाया।

राजा राममोहन राय ने सर्वप्रथम राष्ट्रीय प्रेस की नींव डाली तथा 'संवाद कौमुदी' बंगला में तथा 'मिरात उल' अखबार

Scanned with CamScanner

फारसी में, का संपादन कर भारत में राजनैतिक जागरण की दिशा में प्रयास किया। इनके अतिरिक्त 'इंडियन मिरर' 'अंजुमन समाचार' 'हिन्दू' 'अमृत बाजार पत्रिका' आदि समाचार पत्रों का भी योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा।

(iv) राष्ट्रीय साहित्य का भी राष्ट्रीय भावना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा। भारतेंदु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट तथा रविन्द्र नाथ ठाकुर की रचनाओं ने लोगों को काफी प्रभावित किया। तीव्र परिवहन तथा संचार साधनों में रेल, डाक-तार आदि के विकास ने भी राष्ट्रवाद की जड़ को मजबूत किया।

(v) लार्ड लिटन के कार्यकाल ने भी भारतीयों की राष्ट्रवाद की भावना को एकसूत्र करने का कार्य किया। लिटन की भारतीयों की विरोधपूर्ण नीतियों में 1876 से 1884 तक ऐसे विरोधी कार्य किये गये जिनसे राष्ट्रीय आंदोलन को तीव्र गति प्राप्त हुई। 1877 ई० में जब दक्षिण भारत के लोग अकाल से पीड़ित थे तो लिटन ने दिल्ली में ऐतिहासिक दरबार की भव्यता पर लाखों रुपये व्यय किये थे।

1877 ई० में उसने 'भारतीय प्रेस अधिनियम' लाया। भारतीयों और अंग्रेजों के बीच भेदभाव पर आधारित 'शस्त्र अधिनियम' भी इसी समय स्वीकार किया गया। और इन सबके बाद 'इल्बर्ट बिल' ने भारतीयों के अंदर राष्ट्रीयता की भावना को जगाने में एक बार पुनः महत्वपूर्ण योगदान दिया।

निष्कर्ष / मूल्यांकन :— भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास का

Scanned with CamScanner

अवलोकन करने से पट कहा जा सकता है कि इसे गति प्रदान करने में हमारे राष्ट्रवादी नेताओं, महात्मा गांधी, नेहरू, बोस, घोष, लाला लाजपत राय, भगत सिंह, सुभाषचंद्र बोस तथा बाबासाहेब अंबेडकर आदि के विचारों का अहम योगदान रहा है।

इनके विचारों ने तत्कालीन भारतीय जनमानस को इस कदर से अवगत कराया कि उनके शोषण व उत्पीड़न के लिए अंग्रेजी शासन व उनकी नीतियां पूर्णरूपेण उत्तरदायी हैं। इसके अतिरिक्त तत्कालीन समय में राष्ट्रीय घटनाओं ने भारत में उग्र पंथी राष्ट्रवाद के विकास की पृष्ठभूमि तैयार कर दी और पट स्पष्ट हो गया कि अंग्रेज अजेय नहीं है। यदि हम शोषण करने वाली सरकार से पूर्ण मुक्ति चाहते हैं तो हमें पूर्ण स्वराज्य की ओर कदम बढ़ाने होंगे। और अन्ततः इसी मार्ग पर चलकर भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन ने अंतिम लक्ष्य तक पहुँचकर सफलता पायी जा सकती है।

Rajesh Kr. Singh.
Asst. Professor.
Department of History.
D.S.P.M.U.

Scanned with CamScanner